आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 25 January, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - आज देखे भगवान के प्रति हमारा भाव कितना गहरा है?

आज पच्चीस जनवरी है। हमारी तपस्या बहुत सुन्दर चल रही है। **संसार को प्रकाश देने की।** सुनना और देखना यही आधार है। चाहे कोई कमप्लेन करे, चाहे कोई कमप्लीट बने।

बहुत गुह्य महावाक्य है बाबा के। **हम जो कुछ देखते है और सुनते है उसपर हमारा चिन्तन होता रहता है। व्यर्थ सुनने से व्यर्थ चिन्तन। ईश्वरीय महावाक्य से महान चिन्तन।**

यदि हम देखते है इस संसार को यह तो मृतप्राय है, यह तो समाप्त हुआ कि हुआ। यदि हम देखते है आत्माओं को, यदि हम सुनते हुए उसे टर्न करते रहते है, निगेटिव को पाजिटिव में तो हम श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रह सकते है।

परन्तु यदि हमें कोई सुनाने आये और हम उसे सुनकर ग्रहण कर लेते है, उस अनुसार अपनी धारणायें बना लेते है तो इससे हमारा चिन्तन व्यर्थ बहुत जायेगा। और दूसरी आत्माओं के लिए अवगुणी दृष्टि हो जायेगी। और उससे हम वैसा ही व्यवहार करेंगे।

इसलिए यदि कोई व्यर्थ सुनाता है तो उसको समर्थ में बदल दे। **बोल बहुत important है।** यह मनुष्य को महान भी बना सकते है, यह बोल वरदानी बोल भी हो सकते है, और यह बोल किसी की शान्ति भी छीन सकती है।

अपने चित से क्रोध को समाप्त करके योगयुक्त होकर अंतरचित को शीतल करे। हमारे मन में किसी के लिए ज़रा भी क्रोध नहीं होना चाहिए। अन्यथा हम अंदर ही अंदर गरम होते रहेंगे, हमारी शीतलता, शान्ति की शक्ति जलकर नष्ट होती रहेगी।

यह क्रोध हमारी विवेकशक्ति को नष्ट कर देता है। हमारी निर्णय शक्ति इससे डगमगाने लगती है। **इसलिए चित्त को शीतल शान्त करते रहे।**

हमें इस जीवन में कितना बड़ा भाग्य मिला। स्वयं भगवान बाप बनकर अपना प्यार हम पर लुटा रहे है। प्यार से हमारी पालना कर रहा है।

उसके प्यार को हम तब देख लेते है जब वो अव्यक्त रूप से इस धरा पर उपस्थित होते है। इतना प्यार देते है वो हम सबको, हम सभी के लिए उनके दिल में इतना अथाह प्यार है जो वो कहते है ....

" जब बच्चे दुःखी होते है तब मुझे भी वेआरामी हो जाता है " ...

भगवान को भी फ़ील ....

" **मेरे बच्चे, दुःखी न हो** .. यह सदा ही श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर रहे .. और अपने भाग्य को महान बनाते चले.. जिन्हें संसार को दुःखों से मुक्त करना है वो स्वयं ही यदि दुःखी रहेंगे तो दुसरों का भला कैसे कर पायेंगे? "

तो बाबा के इस प्यार को हम मेहसूस करे, और उसकी **याद में मग्न हो।** जितना जितना हम उसे ज्यादा याद करते है, **उसकी कारेन्ट हमें मिलती जाती है।** और यह कारेन्ट हमारे जन्म जन्म के विकर्मो को नष्ट कर देती है। विकारों को नष्ट कर देती है।

तो हम अपनी शब्दों पर भी बहुत ध्यान दे। हम कम बोलने की अादत डालें। क्योंकि जो मनुष्य अन्तर्मुखी नहीं है, जो धैर्यचित्त और गम्भीर नहीं है, उसे योग का सुख नहीं मिल सकता।

वाह्यमुखता तो बाहर की ओर हमारा आकर्षण करा देती है। क्योंकि यह देह पाँच तत्वों से बना हुआ है। तो यह पांच तत्वों की दुनिया उसे खीचने लगती है।

परन्तु हमें तो अपने घर जाना है यह सबकुछ यही छोड़कर। हमारी तो पाँच हज़ार साल की यात्रा पूरी हो रही है। तो आज सारा दिन यह दो अभ्यास करते रहेंगे।

" हमारी पाँच हज़ार साल की यात्रा पूरी हो रही है .. ऊपर से अब बाबा की कारेन्ट मुझे मिल रही है "

फ़ील करेंगे इस कारेन्ट को। और ...

" सबकुछ छोड़कर मैं आत्मा वापिस जा रही हूँ अपने घर। और वहाँ बैठ गई पुनः बाबा के पास .. उसकी किरणों के नीचे "

यह दोनों अभ्यास आज सारा दिन करके अपने तपस्या को और गहन बनायेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org